

बापू जी हां महात्मा गांधी - हमारे राष्ट्रपिता हैं। आप जानते हैं बापू - राष्ट्रपिता कैसे कहलाये? दरअसल बापू को राष्ट्रपिता की 'उपमा' से आजाद हिन्द फौज के अमर सिपाही सुभाष चन्द्र बोस ने नवाजा था। जगजाहिर है कि गांधी जी और सुभाष बाबू में अनेक मसलों पर मतभिन्नता थी। वे गर्म दल के नेताओं में शुमार होते थे तो बापू सहज रहकर अपनी बातें मनवाने के लिए ख्यात रहे। बहरहाल, आजाद हिंद फौज के प्रधान सेनापति के रूप में 4 अगस्त 1944 को रंगून रेडियो से नेताजी ने महात्मा गांधी के नाम एक अपील जारी करते हुए कहा था, 'भारत की स्वतंत्रता का अंतिम युद्ध प्रारंभ हो चुका है।

आजाद हिंद फौज की सेना बहादुरी से भारत की धरती पर लड़ रही हैं। अनेक परेशानियों और कठिनाइयों के बावजूद धीरे-धीरे स्थिर गति से आगे बढ़ रही हैं। यह सशस्त्र संघर्ष तब तक जारी रहेगा, जब तक कि अंतिम ब्रिटेनवासी को भारत से खदेड़ नहीं दिया जाता है। 'हे राष्ट्रपिता' - भारत की स्वाधीनता की इस पवित्र लड़ाई में हम आपका आशीर्वाद और आपकी शुभकामनाएं चाहते हैं। जय हिंद!' सुभाष बाबू की इसी अपील के बाद देश की जनता ने गांधी जी को 'राष्ट्रपिता' पुकारना आरंभ कर दिया। मतभेद के बावजूद नेताजी बापू को बेहद सम्मान देते थे। त्रिपुरी अधिवेशन 1938 में जबलपुर में हुआ था। यहां कांग्रेस अध्यक्ष का चुनाव होना था। गांधी जी - नेताजी को दोबारा अध्यक्ष बनाए जाने के पक्ष में नहीं थे। इसके लिए नेताजी ने प्रस्ताव रखा कि यदि आचार्य नरेंद्र देव को उम्मीदवार बनाया जाता है तो वे पीछे हट जाएंगे। नेताजी और आचार्य एक ही विचारधारा के अनुयायी थे। लेकिन समझौता नहीं हुआ। गांधी जी ने पट्टाभि सीता मैया को अपने उम्मीदवार के रूप में खड़ा कर दिया। नेताजी भी नहीं माने। मतदान के बाद जब परिणाम सामने आए तो नेताजी बहुमत से पुनः अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के अध्यक्ष चुन लिए गए। इसके बाद गांधी जी और नेताजी में मतभेद इतने मुखर हो गए कि कांग्रेस अंदर तक हिल गई। अंत में कार्यसमिति के प्रश्न पर ये मतभेद इस हद तक पहुंच गए कि सुभाष बाबू को अध्यक्ष पद से त्याग-पत्र देना पड़ा। अलबत्ता नेताजी ने कांग्रेस के भीतर ही 1939 में एक सहयोगी संगठन फारबर्ड ब्लॉक की स्थापना कर डाली। इसमें शामिल हुए लोग नेताजी की सोच के अनुरूप योग्य व कर्मठ नहीं थे।

अंततः परिणाम यह निकला कि नेताजी ने कांग्रेस ही छोड़ दी। चूंकि नेताजी में अदम्य देशभक्ति थी, इसलिए वे आजादी की लड़ाई के प्रति आक्रामक रुख दर्शाते रहे। सितंबर 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ हो गया था। नेताजी इस युद्ध के होने की घोषणा पहले ही कर चुके थे। वे इस युद्ध में कांग्रेस के हस्तक्षेप के साथ अंग्रेजों का तख्ता पलटने की मंशा पाले हुए थे। किंतु कांग्रेस तत्काल कुछ भी करने में असमर्थ रही। साल 1940 मार्च में रामगढ़ कांग्रेस सम्मेलन हुआ। इस समय कांग्रेस के अध्यक्ष मौलाना अब्दुल कलाम आजाद थे। नेताजी ने इसी के समानांतर रामगढ़ सम्मेलन के विरोध में सम्मेलन किया। जो बहुत सफल रहा। हां, नेताजी के दबाव में कांग्रेस ने ब्रिटिश सरकार से प्रश्न किया कि 'वह बताए इस युद्ध का उद्देश्य क्या है। यदि युद्ध का उद्देश्य लोकतंत्र की रक्षा है तो भारत में लोकतंत्र की स्थापना होनी चाहिए, तभी भारत इस लड़ाई में खुलकर सामने आ सकता है।' किंतु ब्रिटिश सरकार ने कोई उत्तर नहीं दिया।

नेताजी इस सम्मेलन का हश्र जानते थे, इसीलिए वे इस समझौते के विरुद्ध थे। नेताजी फिरंगी हुकूमत के युद्ध अपराधी थे, इसलिए उन्हें उनके घर पर ही नजरबंद कर दिया गया था। इस समय नेताजी विचित्र द्वंद से गुजर रहे थे। उन्हें बोध हो रहा था कि केवल आहिंसात्मक उपायों से स्वतंत्रता असंभव है? नेताजी इस युद्ध को भारतीय आजादी के लिए एक अवसर के रूप में देख रहे थे, क्योंकि इस समय ब्रिटिश हुकूमत कई मोर्चों पर एक साथ लड़ रही थी, इसलिए आंतरिक रूप से कमजोर थी। इसलिए नेताजी कमजोर कड़ी पर चोट करने के इच्छुक थे। इसी इच्छा को अंजाम तक पहुंचाने की अदम्य इच्छा पाले हुए नेताजी जनवरी 1941 को पुलिस की आंखों में धूल झाँकते हुए नौ दो ग्यारह हो गए। नेताजी पेशावर होते काबुल पहुंचे। काबुल में उन्हें राष्ट्रभक्त उत्तमचंद का साथ मिला। यहां से इटली दूतावास की मदद से मास्को होते हुए नेताजी जर्मन की राजधानी बर्लिन पहुंच गए। यहां उन्होंने एक सैनिक जत्था बनाया, लेकिन उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा। इसी समय समाचार मिला कि सिंगापुर में पकड़े गए भारतीय सैनिकों की एक सेना बनाई जा गई है। रासबिहारी प्रथम विश्व युद्ध के समय भारत और भारत के बाहर क्रांति का प्रयास कर चुके थे। रासबिहारी ने एक जापानी महिला से शादी की थी, इसीलिए उन्हें जापानी नागरिकता मिल गई थी। रासबिहारी बूढ़े हो रहे थे। उन्हें जब सुभाष के बर्लिन में होने की खबर मिली तो संदेश भिजवाया कि

आप यहां आकर इस सेना का नेतृत्व करें। नेताजी भी यही चाहते थे। दरअसल नेताजी जब अपने ही घर में नजरबंदी काट रहे थे, तब उन्होंने विदेश में स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत भारतीयों की जानकारी प्राप्त कर ली थी, जिससे जरूरत पड़ने पर मदद ली जा सके। हिटलर ने नेताजी को पनडुब्बी में सिंगापुर भेजने की व्यवस्था की। 2 जुलाई 1943 को नेताजी सिंगापुर हवाई अड्डे पर पहुंचे। यहां उनका भारतीय नागरिकों और भारतीय राष्ट्रीय सेना के उच्च अधिकारियों ने जोश के साथ स्वागत किया। उन्हें सैनिक सलामी दी गई।

दरअसल, नेताजी के सिंगापुर पहुंचने के पहले ही जापान एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में पेश आ गया था। उसका अनेक फिरंगी हुकूमत वाले देशों पर आधिपत्य हो गया था। इस दौरान ब्रिटिश फौज के रूप में लड़ रहे कई सैनिक जापान के हाथ आ गए थे। रासबिहारी बोस ने इन्हीं सैनिकों को साथ लेकर आजाद हिंद फौज बनाने की ठान ली। इस लक्ष्यपूर्ति के लिए जून 1942 में पूर्वी एशिया के भारतीयों का एक सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता रासबिहारी ने की। यहीं कप्तान मोहनसिंह के नेतृत्व में आजाद हिंद फौज के गठन का प्रस्ताव भारतीयों के समक्ष रखा गया। अपनी मातृभूमि को फिरंगी हुकूमत की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए 35 हजार भारतीय तुरंत सहमत हो गए। परंतु 16 हजार सैनिकों को लेकर आजाद हिंद फौज 1 सितंबर 1942 को बाकायदा अस्तित्व में आ गई। नेताजी जब जापान पहुंचे तो पहले तोजो से मिले। इस मुलाकात में जापान के रक्षा व विदेश मंत्री भी शामिल हुए। नेताजी ने यहां तोजो से दो टूक प्रश्न किया, 'क्या जापान भारत के स्वाधीनता आंदोलन को बिना शर्त मदद करने को तैयार है?' तोजो ने तत्काल सहमति जता दी।

नेताजी ने जापान पहुंचने से पहले ही रासबिहारी से यह पूछवा लिया था कि क्या वे और उनकी सेना उनका नेतृत्व स्वीकारने को तैयार है। इसका उत्तर हां में मिलने के बाद ही नेताजी सिंगापुर के लिए रवाना हुए थे। यहां रासबिहारी ने एक विशाल आमसभा कैथ सिनेमा में आयोजित करके नेताजी को 8 जुलाई 1943 को आजाद हिंद फौज की कमान सौंप दी। नेताजी ने इसी दिन 'दिल्ली चलो' का नारा लगाते हुए कहा, 'हमारा लक्ष्य दिल्ली के लाल किले पर तिरंगा फहराना है -यह कार्य आसान नहीं है, कांटों से भरा है।' नेताजी ने यही 'जय हिंद' का नारा दिया। तिरंगा झंडा भी इसी समय राष्ट्रीय झंडे के रूप में स्वीकार किया गया। नेताजी ने कप्तान सहगल, शहनवाज़ और जीएस डिल्लन के नेतृत्व में सैनिकों को कमान सौंप दी। कप्तान लक्ष्मी सहगल के नेतृत्व में झांसी की रानी रेजीमेंट का गठन किया। यह भारत की पहली महिला सेना थी, जिसने स्वतंत्रता संघर्ष में अभूतपूर्व योगदान दिया। नेताजी महात्मा गांधी और कांग्रेस के प्रति कितना सम्मान रखते थे, इसकी जानकारी नवंबर 1943 सिंगापुर रेडियो पर दिए भाषण में मिलती है। उन्होंने कहा था, 'हम मातृभूमि की पूर्ण स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं।

स्वतंत्र भारत में कैसी सरकार गठित की जाए और उसकी नीति क्या हो, इसका निर्णय करने का अधिकार अखिल भारतीय कांग्रेस को ही होगा। इस सफलता के लिए हमें महात्मा गांधी का आशीर्वाद चाहिए। 31 दिसंबर 1943 को नेताजी सेना का नेतृत्व करते हुए अंडमान-निकोबार द्वीप समूह पहुंचे और इसे अंग्रेजों से स्वतंत्र कराया। यहां से नेताजी रंगून पहुंचे। यहां आईएनए की अग्रिम कमान स्थापित की। यहां रहने वाले भारतीयों से स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए धन का भी संग्रह किया। यहां से यह सेना बर्मा पहुंची। 4 फरवरी 1944 को फिरंगियों से हुई लड़ाई के बाद अराकान पर कब्जा कर लिया। यह सेना 11 मार्च 1944 को भारतीय सीमा में घुसी चली आई और 8 मोर्चों पर एक साथ लड़ते हुए कोहिमा व इम्फाल को अपनी अधीनता में ले लिया। 14 अप्रैल 1944 को मणिपुर के मोइरंग को अपने अधीन कर लिया। यहां स्वयं नेताजी ने युद्ध-भूमि में लड़ते हुए सैनिकों की हौसला-अफजाई की और अपने ही हाथों से ध्वज फहराया। इस दुर्गम क्षेत्र में लगातार दो माह संघर्षरत रहते हुए सैनिकों को घास व पत्ते खाकर समय गुजारना पड़ा था। यही वह समय था, जब परिस्थितियां नाटकीय ढंग से बदलने लगीं। 12 अगस्त 1945 को नेताजी को सूचना मिली कि जापान ने आत्म-समर्पण कर दिया है। नेताजी तुरंत सिंगापुर पहुंचे। 16 अगस्त को वे कर्नल हबीबुर्रहमान, कर्नल प्रीतम सिंह और एसए अयैर के साथ एक बमवर्षक विमान से बैंकॉक पहुंचे। 17 अगस्त की सुबह सैगोन पहुंचे। यहां से नेताजी एक अन्य बमवर्षक विमान से उड़े। उनके साथ कर्नल रहमान भी थे। यह विमान फारमूसा द्वीप में दुर्घटनाग्रस्त हो गया, ऐसा माना जाता है कि इस विमान दुर्घटना में नेताजी की दुःखद मृत्यु हो गई। इस प्रकार आजादी की लड़ाई में नेताजी का योगदान बहुत महत्वपूर्ण रहा है।

(प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: मनुज फीचर सर्विस में छपे लेखों के विचारलेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।